नारी के प्रति नारी की संवेदनहीनता को दर्शाती ममता कालिया की कहानियां: माँ, उमस एवं शाल

श्वेता रानी

सारांश: संवेदना शब्द मूलतः संस्कृत के 'संवेद' शब्द से निर्मित हुआ है। संवेदना का शाब्दिक अर्थ है- सुख-दुःख का बोध, ज्ञान एवं अनुभव होना। इस लौकिक जगत में मनुष्य को सुखात्मक एवं दुखात्मक दोनों प्रकार की अनुभूतियों का अनुभव होता है। उसके यह अनुभव संवेदना कहलाते हैं। इसके विपरीत संवेदनहीनता का तात्पर्य है, संवेदनहीन होने का भाव या अवस्था, कठोरता या निर्ममता, क्रूरता आदि अथार्त किसी के दुःख-सुख का अनुभव न कर पाना। इस प्रकार किसी के प्रति दयाहीनता का भाव रखना ही संवेदनहीनता कहलाती है। नारी ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ रचना है, जिसे उसने बाहर से कोमल तथा भीतर से सहनशील बनाया है। हमारे समाज में चिरकाल से ही पुरुषों द्वारा नारी का शारीरिक, मानसिक, आर्थिक आदि विभिन्न प्रकार से शोषण देखने को मिलता है, जिसे साहित्यकारों ने अपनी लेखनी द्वारा साहित्य की विभिन्न विधाओं में व्यक्त किया है। साहित्य में स्त्री-विमर्श के आरम्भ होने के साथ ही स्त्री-लेखिकाएँ अपने समाज में नारी के साथ हो रहे भेद-भाव तथा स्वयं एक नारी की दूसरी नारी के प्रति संवेदनहीनता के प्रति सजग हुई, जिसे उन्होंने अपने साहित्य में जीवंतता के साथ उजागर किया। इन लेखिकाओं में ममता कालिया का स्थान सर्वोपरी है, इनकी माँ, उमस एवं शाल कहानियाँ इस सन्दर्भ में सार्थक सिद्ध होती हैं।

बीज शब्द: संवेदनहीनता, दयाहीनता, अमानवीयता, नारी-शोषण आदि

ममता कालिया हिंदी-साहित्य की मूर्धन्य कथाकारों में अपना विशेष स्थान रखती हैं। इनका जन्म 2 नवम्बर 1940 ई० को मथुरा, वृन्दावन में हुआ। प्रथमत: इन्होंने ममता अग्रवाल के नाम से साहित्य-लेखन का आरम्भ किया था किन्तु विवाहोपरांत अपने पति रवीन्द्र कालिया के नाम के अनुरूप ही इन्होंने अपने नाम के साथ कालिया उपनाम जोड़ लिया और ममता कालिया नाम से साहित्य-सृजन करने लगी। ममता जी ने अपने लेखन की शुरुआत में सन 1960 से 1965 तक केवल कविताएँ लिखी, जिनमें इनके खाँटी घरेलू औरत तथा कितने प्रश्न करूं काव्य-संग्रह बहुत लोकप्रिय हुए परन्तु धीरे-धीरे वह कहानी एवं उपन्यास लेखन की ओर भी प्रवृत हुईं ममता कालिया ने लगभग 144 कहानियों की रचना की, जो इनके बारह कहानी-संग्रहों के अंतर्गत संकलित हैं, इन कहानी-संग्रहों के शीर्षक हैं- छुटकारा, एक अदद औरत, सीट नंबर छह, प्रतिदिन, उसका यौवन, जाँच अभी जारी है, बोलने वाली औरत, मुखौटा, निर्मोही, थिएटर रोड के कौवे, पच्चीस साल की लड़की, काके दी हट्टी। उपन्यास के क्षेत्र में ममता कालिया ने बेघर, नरक दर नरक, प्रेम कहानी, लड़कियां, एक पत्नी के नोट्स, दौड़, अँधेरे का ताला तथा दुक्खम-सुक्खम नामक सर्वश्रेष्ठ उपन्यासों की रचना की।

ममता कालिया की लगभग सभी कहानियाँ सामाजिक विषमताओं का विश्लेषण करती है, जिसके अंतर्गत इन्होनें नारी के शोषक एवं शोषित दोनों रूपों को पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया है। 'माँ' कहानी में लेखिका ने अपनी माँ और दादी की कहानी के माध्यम से एक सास द्वारा अपनी बहु के शोषण करने की कथा को अभिव्यक्त किया है। इसमें ममता कालिया जी ने आत्मपरक तथा कथात्मक शैली का प्रयोग किया है।

लेखिका की दादी के अनुसार उनकी बहु अथार्त लेखिका की माँ को घर का कोई भी काम अच्छे तरीके से करना नहीं आता, दादी का कहना है कि उनकी बहु हर समय घरेलू कार्यों में ग़लतियाँ करती रहती है। जिस प्रकार दादी की सास ने उनके ऊपर अत्याचार किये थे, वैसा ही अमानवीय व्यवहार वह भी अपनी बहु के साथ करती है। दादी कहती है, "देखो कैसे घुन्नी बनी बैठी है, न काम से मतलब न काज से। एक हम थे। हमारी सास की नज़र उठी नहीं कि उनके चरणों पर लोटने लगते थे।"[1] दादा दुकान पर काम करते थे इसलिए वह रात को देर से घर आते थे। ससुर के घर लौटने तक बहु खाने के लिए चौके में ही उनकी प्रतीक्षा करती थी तथा घर का सारा काम संपन्न करके सबसे अंत में सोने जाती थी किन्तु उसके पश्चात् भी दादी अपनी बहु को चैन से सोने नहीं देती थी। वह बहु को ताना मारते हुए कहती, "रसोई में बिल्ली खड़-खड़ कर रही है और यह यहाँ पसरी पड़ी है। अरे, यों तो न उजाड़ो अपने भरतार का घर!"[2] लेखिका के पिता आगरा में रहकर पढ़ाई करते थे और कभी-कभी घर में आते थे। अपनी सास का उपेक्षापूर्ण व्यवहार सहन करते-करते बहु का स्वभाव भी चिढ़चिढ़ा हो जाता है और वह अपनी बेटी (लेखिका) के साथ भी बुरा बर्ताव करने लगती है किन्तु दादी अपनी पोती से बहुत प्रेम करती थी, वह उसका पक्ष लेते हुए बहु के गुस्सा होने पर कहती, "बहुत गुस्सा आय रहा हो तो दो रोटी कम खाय लीजौ, गुस्सा आपे उतर जायेगौ।"[3]

सास के निरकुंश शासन में बहु की स्थिति इतनी ख़राब थी कि यदि सास खुश होती तो उसको एक रोटी अधिक खाने को मिल जाती अन्यथा उसे दिन-रात ताने और अपमान सहन करना पड़ता था। लेखिका की माँ का विचार था कि पति कि शिक्षा पूरी होने के पश्चात् उसके जीवन से सारे कष्ट दूर हो जाएँगे। जब लेखिका के पिता घर आते थे, तब दादी बहुत खुश होती थी। एक दिन बेटे के घर आने की ख़ुशी में उन्होंने उसके लिए दही मंगाया किन्तु लेखिका ने चोरी से दही के ऊपर से सारी मलाई खा ली। जब दादी को दही के ऊपर मलाई नहीं दिखाई दी तो इसका दोष भी उन्होंने अपनी बहु पर ही लगाया। बहु ने मलाई नहीं खाई थी इसलिए उसने इस बात को मानने से साफ़ इंकार कर दिया लेकिन सास अपनी बहु को झूठा कहते हुए अपने पुत्र को उसकी पिटाई करने को कहती है, "देखो बड़के, मुझे झूठा ठहरा रही है। ये जन्म की चटोरी है। जो अपनी माँ का जायौ है तो लगा एक लात याके।"[4] बेटा भी अपनी पत्नी की बात पर विश्वास न करके अपनी माँ की बात को ही सच मानता है और खाना छोड़कर वहां से चला जाता है।

लेखिका की माँ लेखिका को उसके बचपन की एक घटना बताती है, जिसके अनुसार लेखिका जब सेंतालिस दिन की थी और उसकी माँ उसे खटोले पर रखकर घर का काम कर रही थी तब एक बन्दर उसे खटोले से उठा ले गया था। वह बन्दर एक तीन मंजिला मकान की छत पर चढ़ जाता है, ये देखकर माँ बहुत घबरा जाती है। बच्ची को बन्दर के हाथ में देखकर आसपास के सारे लोग वहां इकट्ठे हो जाते है किन्तु बन्दर बच्ची को नहीं छोड़ता। जिस छत पर बन्दर बैठा था उससे आठ घर आगे की छत पर दो युवक पतंग उड़ रहे थे। वह युवक अपनी जान पर खेलकर बच्ची को बन्दर से छुड़ाते हैं किन्तु जब बच्ची को सुरक्षित लेकर माँ घर जाती है तो सास खुश होने की जगह उस पर चरित्रहीन होने का आरोप लगाती है। उसके शब्दों में, "आने दे

बड़के को आगरे से, बासै सब बताउंगी। वो दो मुस्टंडे यों ही नहीं अपनी जान पर खेल गये। तेरे का लगते थे, ममेरे भाई या यार! जरूर कोई पुरानी आसनाई रही होगी, नहीं तो कौन किसी की खातिर जान पे खेलतो है।"[5] अतः वह क्रोधित होकर बहु के सर पर बैठने का पट्टा निकाल कर मारती है जिससे उसके सर से बहुत खून निकलता है और बाद में माथे पर निशान बन जाता है। वह निशान लेखिका को उसकी माँ लेखिका के बड़े होने पर दिखाती है।

'उमस' कहानी में भी नारी की शोचनीय स्थिति दृष्टिगत होती है। इस कहानी की नायिका रानी अपनी सास के कटु व्यवहार को झेलते हुए जीवन व्यतीत करती है। विवाह के आरम्भ के वर्षों में रानी और उसके पति विनोद के बीच में बहुत प्रेम-भाव था। किन्तु कुछ साल बाद पत्नी के शारीरिक परिवर्तन के कारण पति का प्रेम धीरे-धीरे अपनी पत्नी के लिए कम होता गया। रानी घर का सारा काम करती थी, प्रतिदिन घर पर आए हुए मेहमानों की पूरी सेवा करती थी परन्तु फिर भी उसकी सास उससे खुश नहीं रहती थी। घर का सारा काम पूरा करने के बाद भी यदि रानी की आँख लग जाती तो उसकी सास व्यंग करते हुए कहती, "बाल-बच्चेवालियां कहीं दिन-दोपहर इस तरह पैर फैलाकर सोती हैं! अरे, थोड़ी देर सुई-सलाई लेकर बैठ, कपड़े पड़े हैं इस्त्री फेर ले। शाम का काम अभी शुरू नहीं किया तूने।"[6] सास के ये बातें सुनकर रानी फिर से काम में लग जाती थी। जब वह रात को थककर बिस्तर पर सोने पहुंचती तो उसके पति विनोद की इच्छा होती कि उसकी पत्नी उसके साथ प्रेम सहित बातचीत करे लेकिन रानी दिनभर के घरेलू कामों से थके होने के कारण पति की इच्छाओं के अनुसार खरी नहीं उतर पाती थी जिससे पति-पत्नी के मध्य तनाव की स्थिति उत्पन्न हो जाती थी।

सास को पति-पत्नी के बीच की अनबन का पता स्वयं ही चल जाता था और वह बहु के साथ निरकुंश व्यवहार करते हुए उसे व्यंग्यपूर्ण कटु वचन सुनाती रहती थी, "तेरी उमर पर मैं आधी-आधी रात तक कपड़े धोया करती थी, चक्की चलाना, भैंस की सानी-पानी करना, कंडी बनाना, सीना-पिरोना-इस सब की तो गिनती ही नहीं थी। औरत जात का काम प्यारा होता है, चाम नहीं।"[7] जब रानी थकावट के कारण धीरे-धीरे काम करती थी तो सास फिर से डांट-फटकार लगाती थी, "तुझे यह भी पता नहीं कि मरे-मरे हाथ चलने से घर का दलिद्दर कभी नहीं भागता। जल्दी कर, फटाफट खाना बना डाल, मुझे सत्संग में जल्दी जाना है।"[8] रानी मन में सोचती थी कि क्या उसके हिस्से में कभी आराम नहीं आ सकता? उसका भी मन करता है कि वह भी सत्संग जाये किन्तु उसे कहीं घूमने जाने की अनुमति नहीं थी। रानी को घर पर आए हुए अतिथियों और घर के सदस्यों के बीच हो रही बातचीत के मध्य अपने विचार रखने की बिल्कुल आज्ञा नहीं है, इस विषय पर रानी की सास अपने पुत्र से कहती है, "तू मर्द है, पर यह वहां मर्दों के बीच बार-बार क्या करने जाती है? यह नहीं कि औरतों की तरह चाय रखकर अन्दर चली आए।"[9]

घरेलू काम के दवाब के कारण रानी की मानसिक स्थिति अच्छी नहीं रहती, उसका पति और पुत्र पवन भी उसका साथ नहीं देता। रानी मन लगाकर घर का सारा काम करती है किन्तु फिर भी घरवालों को प्रसन्न नहीं रख पाती। उसके व्यवहार से दुखी होकर उसका पति घर में नौकर रखने की बात करता है किन्तु माँ को ये बात

कदापि स्वीकार्य नहीं है कि बहु घर पर आराम करे वह कहती है, “और ये क्या करेगी? आराम? फिर तो यह और भी बिगड़ जाएगी।”[10] रानी को माँ की यह बात सुनकर हंसी आती है क्योंकि वह जानती है कि उसकी सास स्वयं भी आदर्श गुणों से संपन्न नहीं है। बहुत से कार्यों में सास भी त्रुटियाँ करती है लेकिन रानी कभी भी अपनी सास की कोई गलती नहीं निकलती। वह इस बात से भली-भांति परिचित है कि यदि वह भी सास की भांति व्यवहार करने लगी तो घर की शांति भंग हो जाएगी।

ममता कालिया जी की शाल कहानी शिक्षित-महिलाओं द्वारा एक आर्थिक रूप से विपन्न स्त्री को हेय दृष्टि से देखने की कहानी है। इस कहनी की मुख्य नारी पात्र ननकी है, ननकी एक विद्यालय में काम करने वाली बाई की अस्थाई नौकरी करती है। वह यहां अध्यापन का कार्य करने वाली महिला-शिक्षकों के लिए प्रतिदिन चाय बनाने का कार्य करती है। यदि किसी दिन ननकी को चाय बनाने में देर हो जाती है, तो अध्यापिकाएं उस पर भड़क जाती, “अरे अभी तक चाय नहीं चढ़ाई ननकी ने । ननकी, ओ ननकी, कहाँ मर गयी!”[11] ठण्ड के दिनों में ननकी थोड़ी चाय अपने लिए भी बचा लेती थी। एक दिन वह प्रधान-अध्यापिका के पास चाय लेकर जाती है तथा उनकी अच्छी मनोदशा देखकर उनसे अपने लिए एक गर्म शाल की मांग करती है किन्तु वह उसे इंकार करते हुए कहती है, “हमने तुम्हारा ठेका लिया है! और इतनी बहनजी हैं उनसे मांगों। सबके कपड़े पुराने होते हैं।”[12] प्रधान-अध्यापिका के क्रोधित होने का कारण यह था कि उन्होंने पिछले वर्ष भी ननकी को एक शाल खरीदकर दिया था परन्तु वह शाल ननकी ने अपनी भाभी को दे दिया था। बहुत सोच-विचार के पश्चात् बड़ी बहनजी (प्रधानाचार्य) ने ये निर्णय लिया कि सभी अध्यापिकाएं शाल के लिए दो-दो रूपये का चंदा देंगी प्रधान-अध्यापिका की आज्ञानुसार उन्होंने बेमन से पैसे इकट्ठे किये और इन पैसों से ननकी को नीले रंग का शाल प्रदान किया गया, जिसे प्राप्त करके ननकी बहुत खुश हुई।

जब ननकी शाल ओढ़कर विद्यालय में जाती है तो सारी अध्यापिकाएं उसे देखकर चिढ़ जाती हैं। पहले पीरियड् में तिवारी नाम की शिक्षिका कुर्सी-मेज़ साफ़ न होने का दोष ननकी पर लगाती है तथा उसे डांटते हुए कहती है, “यह मेज़ साफ़ की है तुमने, नीचे जाले ही जाले लगे हैं, कुर्सी पर इतनी धूल है, मेरी साड़ी खराब हो गयी। तुम्हें तो नया शाल पहनकर बड़ी अकड़ हो गयी है, सफाई का काम मेरा है या तुम्हारा?”[13] ननकी घबराकर अपनी बात की सफाई देते हुए कहती है कि उसने साफ-सफाई की थी लेकिन वह अध्यापिका प्रधान-अध्यापिका से उसकी शिकायत करने की धमकी देती है। इसके पश्चात् मालवीय नामक अध्यापिका ननकी को चाय बनाने का आदेश देती है। जब वह चाय बनती है तो स्टाफ रूम में अध्यापिकाओं की संख्या बढ़ जाती है और चाय कम हो जाती है, इसपर भी उसको सिद्दीकी नाम की अध्यापिका के व्यंग्यपूर्ण वचन सुनने पड़ते हैं, “लो बोलो, चाय ख़त्म भी हो गयी, तुमने हमें पूछा तक नहीं। ए ननकी, तेरी शाल में हमने भी चंदा दिया है, तू हमीं से चालाकी करती है!”[14] वह रुष्ट होकर कहती है कि आज के बाद उसके हाथ की बनी चाय नहीं पिएगी। वह चपरासी रामदीन को चाय लेने बाहर भेज देती है। उसी समय स्टाफ रूम में प्रधान-अध्यापिका का आगमन

होता है और वह सब अध्यापिकाओं के अपनी-अपनी कक्षा में समय पर ना जाने का आरोप भी ननकी पर लगाती है।

इसी प्रकार शाम होने तक सभी अध्यापिकाएं किसी न किसी बहाने से ननकी को शाल के बारे में ताना मारती हैं तथा बारी-बारी से उस पर अपना क्रोध निकालती हैं। खेलकूद की आखिरी कक्षा में तिवारी नामक शिक्षिका ननकी को पैसे देकर बाहर दुकान से चाय लाने को कहती है, जब ननकी चाय लेकर वापिस आती है तो मैदान में खेलती हुई एक छात्रा उससे टकरा जाती है, जिस कारण सारी चाय मैडम के शाल पर गिर जाती है। यह देखकर वह अध्यापिका आग-बबूला होकर ननकी पर बरस पड़ती है, "ननकी, तुमने तो हद कर दी! खुद नया शाल क्या ओढ़ लिया, दूसरों के कपड़ों को तुम टाटपट्टी समझने लगी। शरम नहीं आती, चाय गिरा दी। मेरा तीन सौ का शाल खराब कर दिया, बदतमीज़ कहीं की।"[15] इस घटना के कारण ही ननकी को छुट्टी की घंटी बजाने में थोड़ी देर हो जाती है। शेष सभी अध्यापिकाएं जो छुट्टी की घंटी की बड़ी देर से प्रतीक्षा कर रही थी, वह फिर से ननकी को खरी-खोटी सुनाती है और उसे शाल देने पर पश्चाताप करती है। उनके अनुसार ननकी नया शाल ओढ़कर लापरवाह हो गयी थी। ननकी सुबह से शाम उस शाल के कारण उनके ताने, व्यंग्य और डांट सुनकर तंग आ जाती है और वह दुखी होकर शाल प्रधान-अध्यापिका को वापिस कर देती है। उसे लगता है कि ये शाल ही उसके दुःख का कारण है अतः वह निर्णय लेती है कि सर्दी के मौसम में वह शाल के बिना रह लेगी किन्तु अध्यापिकाओं की अवहेलना को और अधिक सहन नहीं कर पाएगी।

निष्कर्षतः हम देखते है कि ममता कालिया जी की उपरोक्त तीनों कहानियों में एक स्त्री का दूसरी स्त्री के प्रति दयाहीन, संवेदनहीन एवं आदर्शहीन भाव परिलक्षित हुआ है। यह हमारे समाज की विडम्बना है कि एक नारी बहु के रूप में अपनी सास का जो अत्याचारी, शोषणपूर्ण एवं व्यंग्यपूर्ण व्यवहार झेलती है, वही व्यवहार वह अपनी बहु के साथ दोहराना चाहती है। ऐसा करने पर उसे कुछ अनुचित प्रतीत नहीं होता है। नारी के इसी शोषक रूप का चित्रण ममता कालिया जी की माँ और उमस कहानी में देखने को मिलता है। यह स्त्रियाँ दूसरी स्त्री को कष्ट देकर सुख का अनुभव करती है। वह परिवार में केवल अपनी ही तानाशाही चलाना चाहती हैं। परिवार के अन्य सदस्य पति और पुत्र भी इस अन्याय का विरोध नहीं करते बल्कि प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से वह भी इस शोषण में सम्मिलित होते हैं। शाल कहानी में भी विद्यालय की सभी अध्यापिकाएं आर्थिक रूप से विपन्न विद्यालय की एक चपरासिन के प्रति घृणा का भाव रखती हैं, जो उनकी अमानवीयता एवं संवेदनहीनता का परिचायक सिद्ध होता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1.कालिया, ममता, चर्चित कहानियाँ, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण-2006, पृष्ठ-42
2.वही. पृष्ठ-42
3.वहीं. पृष्ठ -43
4. वहीं. पृष्ठ-43
5.वहीं. पृष्ठ-46
6. वहीं. पृष्ठ-128
7.वहीं. पृष्ठ-129
8.वहीं. पृष्ठ-129
9. वहीं. पृष्ठ-130
10. वहीं. पृष्ठ-131
11. वहीं. पृष्ठ-94
12. वहीं .पृष्ठ-95
13. वहीं. पृष्ठ-97
14. वहीं. पृष्ठ-97
15. वहीं. पृष्ठ-99

श्वेता रानी (शोधार्थी)
ईमेल: schwetarani@gmail.com